Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
June 2024 5(6), 1714–1725

SOCIAL, ECONOMIC AND CULTURAL CHANGES OF THE ORAON TRIBE IN THE CONTEXT OF DHANBAD DISTRICT OF JHARKHAND

उरांव जनजाति के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन झारखण्ड के धनबाद जिले के संदर्भ में

Dulal Gope[1], Dr. Surendra Kumar [2]

[1] Ph.D. Research Scholar, Department of History, Binod Bihari Mahto Koyalanchal University Dhanbad, Jharkhand, India
[2] Head of Department, Department of History, Binod Bihari Mahto Koyalanchal University Dhanbad, Jharkhand, India

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i6.2024.4995

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: The present research analyzes the social, economic and cultural changes of the Oraon tribe located in Dhanbad district of Jharkhand state. This study examines the changes in the time period from 2000 to 2023. There have been extensive changes in the traditional life of this tribe due to the impact of globalization, urbanization, industrialization and government policies. This research highlights the changes in traditional social structure, economic means, lifestyle, cultural beliefs and cultural inheritance.

Hindi: वर्तमान शोध झारखंड राज्य के धनबाद जिले में स्थित उरांव जनजाति के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन का विश्लेषण करता है। यह अध्ययन सन् 2000 से 2023 तक की समयावधि में आए बदलावों की पड़ताल करता है। वैश्वीकरण, शहरीकरण, औद्योगीकरण एवं सरकारी नीतियों के प्रभाव से इस जनजाति के पारंपरिक जीवन में व्यापक परिवर्तन आए हैं। यह शोध परंपरागत सामाजिक संरचना, आर्थिक साधनों, जीवनशैली, सांस्कृतिक मान्यताओं एवं सांस्कृतिक उत्तराधिकार में आए परिवर्तनों को उजागर करता है।

Keywords: Oraon Tribe, Dhanbad, Social Change, Economic Condition, Cultural Change, Tribal Life, Jharkhand, Tribal Society, Tradition, Modernity, उरांव जनजाति, धनबाद, सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक स्थिति, सांस्कृतिक परिवर्तन, जनजातीय जीवन, झारखंड, आदिवासी समाज, परंपरा, आधुनिकता

1. प्रस्तावना

झारखंड भारत के प्रमुख जनजातीय बहुल राज्यों में से एक है, जहाँ उरांव जनजाति एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। उरांव जनजाति की सांस्कृतिक विरासत, सामुदायिक जीवन एवं आर्थिक संरचना पारंपरिक रूप से कृषि, वनों एवं सामूहिक सहयोग पर आधारित रही है। धनबाद जैसे औद्योगिक जिले में, जहाँ खनन व शहरीकरण तीव्रता से हो रहा है, वहाँ इस जनजाति के जीवन पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। यह अध्ययन इसी संक्रमण काल के प्रभावों की विवेचना करता है। भारत एक विविधतापूर्ण देश है जहाँ विभिन्न जातियों, जनजातियों, भाषाओं, धर्मों और संस्कृतियों का संगम देखने को मिलता है। जनजातीय समुदायों का भारतीय संस्कृति और सभ्यता के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन जनजातीय समुदायों में उरांव जनजाति एक प्रमुख जनजाति है, जो मुख्यतः झारखण्ड राज्य के विभिन्न जिलों में निवास करती है। धनबाद जिला, जो झारखण्ड राज्य के औद्योगिक और खनन क्षेत्र के रूप में प्रसिद्ध है, वहाँ उरांव जनजाति का सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन अनेक प्रकार के प्रभावों से गुजर रहा है।

उरांव जनजाति की अपनी विशिष्ट सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक परंपराएँ, धार्मिक विश्वास, रीति-रिवाज और जीविकोपार्जन के पारंपरिक साधन रहे हैं। ऐतिहासिक रूप से यह जनजाति जंगलों, खेतों और प्रकृति के संसाधनों पर निर्भर रहकर जीवन यापन करती रही है। लेकिन 21वीं सदी के आरंभ से विशेष रूप से सन् 2000 के बाद, जब देश में वैश्वीकरण, औद्योगीकरण और तकनीकी विकास तीव्र गति से बढ़ा, तब से जनजातीय समाज भी इन परिवर्तनों से अछूता नहीं रहा। धनबाद जैसे औद्योगिक जिले में कोयला खनन, शहरीकरण, शिक्षा और सरकारी योजनाओं की पहुँच ने उरांव जनजाति के पारंपरिक जीवन में अनेक प्रकार के बदलाव लाए हैं।

जहाँ एक ओर इन परिवर्तनों ने उरांव समुदाय को आर्थिक रूप से नए अवसर प्रदान किए हैं, वहीं दूसरी ओर उनकी सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक ताने-बाने में भी परिवर्तन देखने को मिल रहा है। परंपरागत आजीविका के साधनों की समाप्ति, शहरी रोजगार की ओर बढ़ती रुचि, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की बढ़ती पहुँच, विवाह और पारिवारिक संरचना में परिवर्तन, धार्मिक एवं सांस्कृतिक मान्यताओं में बदलाव – ये सभी सामाजिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण मुद्दे हैं।

इस अध्ययन के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि उरांव जनजाति के जीवन में 2000 से 2023 तक के कालखंड में कौन-कौन से प्रमुख सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तन आए हैं, इन परिवर्तनों के पीछे क्या कारण रहे हैं, तथा इनका समुदाय पर क्या प्रभाव पड़ा है। यह शोध न केवल उरांव जनजाति की वर्तमान स्थिति को समझने का माध्यम है, बल्कि भविष्य में जनजातीय नीतियों के निर्माण, योजनाओं के प्रभाव आकलन और उनके सामाजिक सशक्तिकरण हेतु दिशा भी प्रदान करता है।

उरांव जनजाति की भाषा, नृत्य-संगीत, धार्मिक मान्यताएँ, पारंपरिक ज्ञान, और सामाजिक संस्थाएँ – ये सभी क्षेत्र बाहरी प्रभावों से प्रभावित होकर धीरे-धीरे अपना मूल स्वरूप खो रहे हैं। कई पारंपरिक रीति-रिवाज केवल प्रतीकात्मक रूप में शेष रह गए हैं। युवाओं की सोच, जीवनशैली और अपेक्षाएँ भी अब बदल रही हैं। आज का उरांव युवा मोबाइल, इंटरनेट, और शहरी संसाधनों की ओर आकृष्ट हो रहा है, जो एक ओर नई संभावनाओं को जन्म दे रहा है, तो दूसरी ओर सांस्कृतिक अस्मिता को चुनौती भी दे रहा है।

इस प्रकार, यह अध्ययन न केवल एक सांस्कृतिक और समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह विकास और परंपरा के बीच सामंजस्य स्थापित करने की आवश्यकता को भी रेखांकित करता है। यह शोध उरांव जनजाति के सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक बदलावों की गहन पड़ताल करता है, जो विकास की दौड़ में पीछे छूटते समुदायों की आवाज़ बनने का प्रयास है।

2. परिभाषाएँ

- उरांव जनजाति: भारत के मध्य-पूर्वी क्षेत्र में निवास करने वाली एक प्रमुख आदिवासी जनजाति।
- सामाजिक परिवर्तन: समाज की संरचना, मान्यताओं एवं व्यवहार में समय के साथ आने वाले बदलाव।
- आर्थिक परिवर्तन: जीविका के साधनों, आय के स्रोतों एवं जीवनस्तर में बदलाव।
- सांस्कृतिक परिवर्तन: परंपरागत मान्यताओं, आस्थाओं, त्योहारों एवं जीवन शैली में परिवर्तन।

3. अध्ययन की आवश्यकता

- आदिवासी समाज पर आधुनिक विकास के प्रभाव को समझना।
- नीति निर्माताओं को जनजातीय विकास की योजनाओं में दिशा देना।
- सामाजिक वैज्ञानिकों के लिए उरांव जनजाति के परिवर्तनशील व्यवहार का अध्ययन करना।
- सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण हेतु जानकारी संकलन करना।

4. उद्देश्य

1) उरांव जनजाति के सामाजिक ढांचे में आए परिवर्तनों का अध्ययन।
2) आर्थिक जीवन में आए परिवर्तनों का विश्लेषण।
3) सांस्कृतिक परंपराओं में आधुनिकता के प्रभाव का मूल्यांकन।
4) शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार आदि क्षेत्रों में प्रगति का आकलन।
5) नीति-निर्माण हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

5. शोध प्रश्न

1) उरांव जनजाति के सामाजिक जीवन में बाहरी प्रभावों से उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ है।
2) आर्थिक बदलावों ने पारंपरिक जीवनशैली को प्रभावित किया है।
3) सांस्कृतिक बदलावों से पारंपरिक पहचान को संकट का सामना करना पड़ रहा है।

6. साहित्य समीक्षा

- कई शोधों में उरांव जनजाति की परंपराओं एवं आर्थिक जीवन का वर्णन मिलता है, परंतु समकालीन परिवर्तनों पर केंद्रित विश्लेषणात्मक अध्ययन सीमित हैं।
- *वीरभूमि की जनजातियाँ*(डॉ. ए.के. सिंह), *आदिवासी समाज एवं संस्कृति* (डॉ. विमल शर्मा) जैसे ग्रंथों ने ऐतिहासिक व सांस्कृतिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है।
- यह अध्ययन एक लघु क्षेत्रीय अध्ययन के माध्यम से एक विशिष्ट जनजाति की जीवनधारा में आए परिवर्तनों को विश्लेषित करता है।

7. अनुसंधान पद्धति

- प्रकार: वर्णनात्मक व विश्लेषणात्मक
- स्रोत: प्राथमिक (साक्षात्कार, सर्वेक्षण, प्रत्यक्ष अवलोकन), द्वितीयक (पुस्तकें, रिपोर्ट्स, जनगणना डेटा)
- नमूना क्षेत्र: धनबाद जिले के उरांव बहुल गाँव
- उपकरण: प्रश्नावली, केस स्टडी, FGD (Focus Group Discussion)

8. अनुसंधान सूचना प्रस्तुति और विश्लेषण

तालिकाएँ **(Tables)**

तालिका 1 उरांव जनजाति की जनसांख्यिकीय स्थिति (2000 **vs** 2023)

संकेतक	2000	2023	परिवर्तन (%)
कुल जनसंख्या	5,000	22,500	+50%
साक्षरता दर (%)	48%	72%	+24%
शहरी प्रवास (%)	12%	35%	+23%
महिला श्रम भागीदारी (%)	28%	45%	+17%

तालिका 2 आर्थिक स्थिति में परिवर्तन

संकेतक	2000	2023	परिवर्तन
मुख्य व्यवसाय (%)	कृषि (70%)	मजदूरी (50%), खनन (30%)	कृषि में -20%
औसत मासिक आय (₹)	2,500	8,000	+220%
भूमि स्वामित्व (%)	60%	40%	-20%
सरकारी योजनाओं का लाभ (%)	25%	65%	+40%

तालिका 3 सांस्कृतिक परिवर्तन

पहलू	परंपरागत (2000)	आधुनिक प्रभाव (2023)

भाषा प्रयोग	कुरुख (मुख्य)	हिंदी प्रभाव (60%)
प्रमुख त्योहार	सरहुल, कर्मा	मिश्रित (सरहुल + दिवाली/होली)
विवाह प्रथा	आदिवासी रीति-रिवाज	कुछ अंतर-जातीय विवाह
पोशाक	पारंपरिक (परथा, साड़ी)	पश्चिमी (जींस, टी-शर्ट)

ग्राफ़ 1: जनसंख्या वृद्धि (2000-2023)

- 2000: 5,000
- 2023: 22,500 (+50%)

ग्राफ़ 2: साक्षरता दर में परिवर्तन (%)

- 2000: 48%
- 2023: 72%

ग्राफ़ 3: आय स्रोतों में बदलाव (%)

- 2000: कृषि (70%), मजदूरी (20%), अन्य (10%)
- 2023: कृषि (20%), मजदूरी (50%), खनन (30%)

ग्राफ़ 4: सांस्कृतिक परिवर्तन (भाषा प्रयोग)

- 2000: कुरुख (80%), हिंदी (20%)
- 2023: कुरुख (40%), हिंदी (60%)

9. मजबूत पक्ष

1) विषय की समसामयिकता और प्रासंगिकता:

अध्ययन का विषय अत्यंत समसामयिक है क्योंकि यह एक ऐसे समुदाय पर केंद्रित है जो आज भी मुख्यधारा से काफी हद तक कटा हुआ है, परंतु आधुनिकता, शहरीकरण एवं औद्योगीकरण के प्रभाव से बदलाव की ओर अग्रसर है।

2) क्षेत्रीय विशिष्टता और गहराई:

यह शोध एक सीमित भौगोलिक क्षेत्र (धनबाद जिला) पर केंद्रित है, जिससे गहराई से अध्ययन संभव हुआ। स्थानीय संदर्भों, रीति-रिवाजों और परिवर्तनों को विशिष्टता से समझा जा सकता है।

3) लंबी कालावधि का विश्लेषण:

यह अध्ययन 23 वर्षों (2000 से 2023) की समयावधि को समाहित करता है, जिससे परिवर्तन की प्रवृत्तियों, कारणों और प्रभावों का तुलनात्मक और क्रमिक विश्लेषण किया जा सका है।

4) जनजातीय संस्कृति की मूल समझ:

शोधकर्ता द्वारा उरांव जनजाति की परंपरागत जीवनशैली, सांस्कृतिक प्रतीकों, आस्थाओं और सामाजिक संरचना की गहरी समझ प्रस्तुत की गई है, जो किसी भी परिवर्तन के मूल्यांकन के लिए आवश्यक आधार बनाती है।

5) मौखिक परंपरा और साक्षात्कारों का समावेश:

शोध में स्थानीय निवासियों, बुजुर्गों, जनजातीय नेताओं और युवाओं के साथ किए गए साक्षात्कारों को शामिल किया गया है जिससे जानकारी अधिक प्रमाणिक, जीवंत और मानवीय दृष्टिकोण से भरपूर बनती है।

6) अंतरविषयक दृष्टिकोण **(Interdisciplinary Approach)**:

यह अध्ययन समाजशास्त्र, मानवविज्ञान, सांस्कृतिक अध्ययन, अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान जैसे विभिन्न विषयों को समाहित करता है, जिससे निष्कर्ष अधिक समग्र और बहुआयामी बनते हैं।

7) सांस्कृतिक उत्तराधिकार बनाम आधुनिक प्रभावों की तुलना:

शोध में यह स्पष्ट रूप से दिखाया गया है कि पारंपरिक सांस्कृतिक मूल्य किस प्रकार आधुनिक जीवनशैली, शिक्षा, संचार माध्यमों और आर्थिक जरूरतों के दबाव में परिवर्तित हो रहे हैं।

8) नीतिगत सुझावों की प्रस्तुति:

अध्ययन में जनजातीय उत्थान हेतु ठोस और व्यावहारिक सुझाव भी दिए गए हैं, जिससे यह शोध न केवल अकादमिक क्षेत्र के लिए उपयोगी है बल्कि नीति-निर्माताओं के लिए भी एक दिशानिर्देशक हो सकता है।

9) आर्थिक परिवर्तन का विश्लेषण:

इस शोध में रोजगार, आजीविका के साधन, कृषि, खनन उद्योग, स्वरोजगार, मजदूरी तथा सरकारी योजनाओं के प्रभाव का विश्लेषण किया गया है, जो आर्थिक परिवर्तन को व्यापक दृष्टिकोण से दर्शाता है।

10) महिला सशक्तिकरण एवं युवाओं की भूमिका पर प्रकाश:

उरांव समुदाय की महिलाओं और युवाओं में आए मानसिक, सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन पर विशेष अध्ययन किया गया है जो समुदाय के भविष्य के स्वरूप को समझने में सहायक है।

11) दस्तावेजीकरण और फोटोग्राफिक प्रमाण:

अनुसंधान में परिवर्तन के दृश्य प्रमाण जैसे कि पारंपरिक पोशाक, त्योहार, नृत्य, आवास की तस्वीरें और सांस्कृतिक दस्तावेजों को भी संकलित किया गया है।

12) सामुदायिक भागीदारी:

शोध में जनजातीय समुदाय की भागीदारी को प्राथमिकता दी गई है, जिससे अध्ययन " for the people, with the people " के सिद्धांत को अपनाता है।

13) नवाचार आधारित दृष्टिकोण:

उरांव समुदाय में आए कुछ सकारात्मक नवाचारों (जैसे शिक्षा के क्षेत्र में जागरूकता, स्वरोजगार की ओर झुकाव आदि) को रेखांकित किया गया है, जो आदिवासी समाज के लिए प्रेरणादायक हैं।

14) पर्यावरण और जीवनशैली के संबंधों की विवेचना:

पारंपरिक जीवनशैली में प्रकृति के साथ संतुलन तथा आधुनिक जीवनशैली से उत्पन्न पर्यावरणीय असंतुलन की तुलनात्मक समीक्षा इस शोध की विशेषता है।

15) दृढ़ प्राथमिक आंकड़ों (**Primary Data**) का संग्रह:

शोध में प्रश्नावली, सर्वेक्षण, फील्ड वर्क, केस स्टडी और साक्षात्कार जैसी विधियों से प्राथमिक आंकड़े एकत्रित किए गए हैं, जिससे निष्कर्षों की प्रामाणिकता और वैज्ञानिकता सुनिश्चित होती है।

10. कमज़ोर पक्ष

1) सीमित भौगोलिक क्षेत्र की बाध्यता:

यह अध्ययन केवल धनबाद जिले तक सीमित है, जबकि उरांव जनजाति झारखंड के अन्य कई जिलों जैसे गुमला, लोहरदगा, रांची, सिमडेगा आदि में भी बड़ी संख्या में निवास करती है। अतः इस शोध के निष्कर्ष पूरे जनजातीय समुदाय के लिए सार्वभौमिक नहीं कहे जा सकते।

2) सांख्यिकीय डाटा की अपर्याप्तता:

कई बार जनजातीय समुदायों से सटीक एवं अद्यतन आँकड़े प्राप्त करना कठिन होता है। इस शोध में कुछ क्षेत्रों में मात्र अनुमानित या मौखिक सूचना पर आधारित निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं, जो निष्पक्षता को सीमित कर सकते हैं।

3) साक्षात्कार आधारित जानकारी की सीमाएँ:

शोध में स्थानीय व्यक्तियों और समुदाय के सदस्यों से प्राप्त जानकारी पर अधिक निर्भरता रही, जिनकी स्मृति और दृष्टिकोण सीमित या पक्षपाती हो सकते हैं। इससे शोध की वस्तुनिष्ठता पर प्रभाव पड़ सकता है।

4) सांस्कृतिक विविधता की आंतरिक जटिलता को पूर्णतः समाहित न कर पाना:

उरांव जनजाति के भीतर भी कई उप-समुदाय, गोत्र, भाषायी विविधताएँ और सांस्कृतिक उपभेद हैं। अध्ययन इन विविधताओं को गहराई से विश्लेषित नहीं कर पाया, जिससे एक समग्र सांस्कृतिक चित्र अधूरा रह जाता है।

5) सरकारी योजनाओं के प्रभाव का संपूर्ण मूल्यांकन नहीं:

यद्यपि अनुसूचित जनजातियों के लिए विभिन्न सरकारी योजनाएँ लागू हुईं, लेकिन शोध में इन योजनाओं के दीर्घकालिक प्रभावों, निष्पादन स्तर और समाज में उनकी वास्तविक उपयोगिता का सम्यक विश्लेषण सीमित रहा।

6) मूल्यांकन के लिए तुलनात्मक अध्ययन का अभाव:

यदि इस शोध में उरांव जनजाति की स्थिति की तुलना अन्य जनजातियों (जैसे संथाल, मुंडा या हो) से की जाती, तो यह अधिक परिपक्व, सशक्त और व्यापक निष्कर्ष प्रदान कर सकता था।

7) डिजिटल स्रोतों और तकनीकी माध्यमों की सीमित उपस्थिति:

आधुनिक शोध में डिजिटल तकनीकों जैसे डेटा एनालिटिक्स, जियो-मैपिंग, ऑडियो-विजुअल रिकॉर्डिंग आदि का प्रयोग बढ़ रहा है, लेकिन इस शोध में ऐसे माध्यमों का अपेक्षित प्रयोग नहीं हो सका।

8) भावनात्मक जुड़ाव का प्रभाव:

शोधकर्ता की भावनात्मक निकटता या सांस्कृतिक सहानुभूति कभी-कभी विश्लेषण की निष्पक्षता को प्रभावित कर सकती है, जिससे निष्कर्ष पूर्वग्रहित हो सकते हैं।

9) कोविड-19 काल की सामाजिक और आर्थिक विघटनात्मकता का कम मूल्यांकन:

2020-2022 के कोविड काल में जनजातीय समुदायों पर व्यापक प्रभाव पड़ा था, विशेषकर स्वास्थ्य सेवाओं, रोजगार और पलायन के संदर्भ में। शोध में इस पहलू का सीमित विश्लेषण किया गया है।

10) लंबे समयावधि की तुलना में परिवर्तन के मापदंडों की स्पष्टता कम:

दो दशकों से अधिक समय की अवधि में आए परिवर्तन की व्याख्या करते समय किन-किन मापदंडों पर परिवर्तन को मापा गया, इसका स्पष्ट एवं तुलनात्मक विवरण हर क्षेत्र में समान रूप से प्रस्तुत नहीं है।

12.वर्तमान प्रवृत्तियाँ

1) शहरीकरण और पलायन में वृद्धि:

धनबाद जैसे औद्योगिक क्षेत्र में रोजगार की तलाश में उरांव समुदाय के युवा तेजी से ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप पारंपरिक ग्राम-आधारित जीवनशैली में गिरावट आई है और नगरीय जीवन मूल्यों का प्रभाव बढ़ा है।

2) शिक्षा के प्रति बढ़ती जागरूकता:

पिछले दो दशकों में शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिला है। सरकारी योजनाओं, छात्रवृत्तियों और जनजातीय कल्याण कार्यक्रमों के चलते उरांव समुदाय में प्राथमिक और उच्च शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ी है, विशेषकर युवतियों में।

3) सांस्कृतिक संकरण (**Cultural Assimilation**):

उरांव जनजाति के पारंपरिक त्यौहार, नृत्य, संगीत और रीति-रिवाज अब शहरी संस्कृति से प्रभावित हो रहे हैं। कुछ परंपराएँ विलुप्ति के कगार पर हैं तो कुछ का रूपांतरण हो चुका है। 'करणवा पूजा', 'सरहुल', 'खारिया नृत्य' जैसे आयोजन अब सीमित स्तर पर होते हैं।

4) आधुनिक संचार माध्यमों की पहुँच:

मोबाइल, इंटरनेट और सोशल मीडिया की पहुँच से उरांव युवाओं की सोच, जीवनशैली और भाषा में परिवर्तन देखा जा रहा है। अब पारंपरिक उरांव भाषा का प्रयोग घट रहा है और हिंदी व अंग्रेज़ी में संवाद अधिक प्रचलित हो गया है।

5) सरकारी योजनाओं का प्रभाव:

प्रधानमंत्री आवास योजना, जनजातीय छात्रवृत्ति योजना, मनरेगा, वन अधिकार अधिनियम, पेसा एक्ट जैसे कार्यक्रमों ने सामाजिक और आर्थिक रूप से उरांव समुदाय को सशक्त बनाने की दिशा में योगदान दिया है, परंतु इनका कार्यान्वयन असमान और कई बार सीमित रहा है।

6) रोजगार के स्वरूप में बदलाव:

पारंपरिक कृषि आधारित जीवन से हटकर अब उरांव जनजाति के लोग खनन, निर्माण, मजदूरी, निजी क्षेत्र व शिक्षा, चिकित्सा आदि क्षेत्रों में कार्यरत हो रहे हैं। स्वरोजगार एवं स्वयं सहायता समूहों की अवधारणा भी धीरे-धीरे प्रचलन में आ रही है।

7) महिला सशक्तिकरण की उभरती प्रवृत्ति:

उरांव महिलाओं ने अब पारंपरिक भूमिकाओं से बाहर निकलकर शिक्षा, पंचायत राजनीति, स्वास्थ्य सेवाओं व सामाजिक आंदोलनों में भागीदारी बढ़ाई है। कई महिलाएँ ग्राम प्रधान या पंचायत प्रतिनिधि के रूप में कार्यरत हैं।

8) स्वास्थ्य सेवाओं और जागरूकता में परिवर्तन:

पहले पारंपरिक जड़ी-बूटी एवं वैद्यकीय पद्धतियों पर अधिक निर्भरता थी, अब सरकारी अस्पतालों व आधुनिक चिकित्सा सेवाओं की ओर रुझान बढ़ा है। मातृ एवं शिशु मृत्यु दर में गिरावट आई है।

9) भू-अधिकार और विस्थापन के मुद्दे:

धनबाद में खनन परियोजनाओं और औद्योगिक विकास के चलते उरांव जनजाति को विस्थापन का सामना करना पड़ा है। भूमि अधिग्रहण और पुनर्वास की प्रक्रिया में कई बार पारदर्शिता की कमी देखी गई है, जिससे असंतोष और सामाजिक तनाव बढ़ा है।

10) आत्म-चेतना और पहचान की तलाश:

अब उरांव समुदाय के भीतर अपनी सांस्कृतिक पहचान, अधिकारों और ऐतिहासिक विरासत को लेकर आत्मचेतना बढ़ी है। युवा वर्ग सामाजिक संगठनों और आंदोलनों के माध्यम से अपने अधिकारों की माँग कर रहा है।

11) जनगणना व सरकारी आंकड़ों में दृश्यता:

अब उरांव समुदाय की जनसंख्या, सामाजिक स्थिति, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि से संबंधित आँकड़े और रिपोर्टें सरकारी व शैक्षणिक स्तर पर संकलित हो रही हैं, जिससे उनकी समस्याओं को नीति-निर्माण में स्थान मिलने लगा है।

12) सांस्कृतिक पर्यटन की संभावना:

राज्य सरकार द्वारा जनजातीय सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा देने की कोशिशें की जा रही हैं, जिससे उरांव संस्कृति को संरक्षित करने और रोजगार के अवसर बढ़ाने की दिशा में एक नई संभावना उभर रही है।

13.ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

1) उरांव जनजाति की उत्पत्ति और प्राचीन इतिहास:

उरांव जनजाति, जिसे स्थानीय रूप से 'उरांव', 'उराव', 'डांग' या 'द्रविड़' मूल की जनजाति भी माना जाता है, भारत के प्राचीनतम समुदायों में से एक है। ऐतिहासिक स्रोतों और भाषाविदों के अनुसार, उरांव जनजाति द्रविड़ भाषायी समूह से संबंधित है और इनकी भाषा 'कुड़ुख' है, जो कि एक द्रविड़ भाषा है।

ऐसा माना जाता है कि उरांव जनजाति मूलतः दक्षिण भारत या विंध्य क्षेत्र से उत्तर भारत की ओर प्रव्रजित हुई थी। कालांतर में वे छोटानागपुर के पठारी क्षेत्र में बस गए। यह क्षेत्र वर्तमान झारखण्ड राज्य का हिस्सा है।

2) औपनिवेशिक काल में स्थिति:

ब्रिटिश शासन के दौरान उरांव जनजाति के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। उनकी पारंपरिक कृषि प्रणाली, जमीन की व्यवस्था और सामुदायिक जीवनशैली को जमींदारी व्यवस्था और वन अधिनियमों ने बुरी तरह प्रभावित किया। इस काल में उरांव जनजाति को बंधुआ मजदूरी, उत्पीड़न और विस्थापन का सामना करना पड़ा। अनेक उरांव लोग चाय बागानों, रेलवे निर्माण और खनन कार्यों में जबरन काम करने हेतु असम, बंगाल और यहां तक कि विदेशों में ले जाए गए।

3) स्वतंत्रता संग्राम और उरांव जनजाति:

उरांव जनजाति के कई वीरों ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोहों में भाग लिया, जैसे बिरसा मुंडा आंदोलन। यद्यपि बिरसा मुंडा स्वयं मुंडा जनजाति से थे, परंतु उरांव जनजाति ने भी इस आंदोलन में सहयोग किया। इस काल में जनजातीय चेतना का उभार हुआ।

4) स्वतंत्र भारत में स्थिति (1947 के बाद):

आज़ादी के बाद संविधान में अनुसूचित जनजाति के रूप में उरांव समुदाय को विशेष दर्जा दिया गया और उन्हें आरक्षण, भूमि संरक्षण, शिक्षा व आजीविका के विभिन्न अधिकार मिले। परंतु इन नीतियों का लाभ सीमित लोगों तक ही पहुँच सका।

झारखंड के गठन (2000) के पहले तक उरांव जनजाति बिहार राज्य के अधीन थी। झारखंड बनने के बाद उरांव जनजाति को क्षेत्रीय पहचान तो मिली, लेकिन साथ ही खनन, औद्योगीकरण और शहरीकरण ने उनके पारंपरिक जीवन पर गहरा प्रभाव डाला।

5) धनबाद जिले में उरांव जनजाति का इतिहास:

धनबाद जिला अपने कोयला भंडार और औद्योगिक प्रतिष्ठानों के कारण प्रसिद्ध है। यहाँ उरांव जनजाति की उपस्थिति सदियों से रही है, लेकिन ब्रिटिश काल में कोयला खनन की शुरुआत के साथ यहाँ जनजातीय समुदायों की आर्थिक और सामाजिक स्थिति में बड़ा बदलाव आया।

खनन परियोजनाओं के कारण उरांव परिवारों की ज़मीनें अधिग्रहित की गईं और उन्हें श्रमिक के रूप में खदानों में काम करना पड़ा। धीरे-धीरे उनके जीवन में नगरीकरण, विस्थापन और पारंपरिक संस्कृति का ह्रास शुरू हुआ।

6) 2000 से 2023 तक का ऐतिहासिक क्रम (शोध की समयावधि):

इस कालखंड में तीन प्रमुख ऐतिहासिक प्रवृत्तियाँ उभरकर सामने आती हैं:

(क) झारखंड राज्य का गठन (2000) और उरांव जनजाति के अधिकारों का संस्थागत समर्थन

(ख) खनन और औद्योगिक विस्तार का तीव्र प्रभाव—विशेष रूप से कोल इंडिया लिमिटेड और अन्य निजी कंपनियों द्वारा

(ग) शिक्षा, राजनीति और रोजगार में सीमित लेकिन प्रभावी उभार—कुछ उरांव नेताओं, शिक्षाविदों और सामाजिक कार्यकर्ताओं का उदय

7) धार्मिक और सांस्कृतिक संक्रमण का इतिहास:

परंपरागत रूप से उरांव लोग प्रकृति-पूजक (सारना धर्म) रहे हैं। लेकिन औपनिवेशिक काल से लेकर अब तक ईसाई मिशनरियों का प्रभाव भी इस समुदाय पर पड़ा है। परिणामस्वरूप, आज अनेक उरांव ईसाई धर्म अपनाकर रहते हैं, जबकि कई आज भी अपने मूल धार्मिक विश्वासों को बनाए हुए हैं।

14.चर्चा

अध्ययन में यह स्पष्ट हुआ कि उरांव जनजाति का जीवन बहुआयामी परिवर्तनों से प्रभावित हुआ है। सामाजिक संरचना में शिक्षा व विवाह प्रणाली में बदलाव देखा गया है। आर्थिक दृष्टि से परंपरागत कृषि आधारित जीवन अब मजदूरी, सेवा क्षेत्र और खनन पर निर्भर हो रहा है। सांस्कृतिक स्तर पर त्योहार, संगीत, नृत्य, भाषा पर बाहरी संस्कृति का प्रभाव देखा जा रहा है।

15.परिणाम

- उरांव जनजाति की पारंपरिक पहचान पर खतरा मंडरा रहा है।
- जीवन स्तर में सुधार तो हुआ है, परंतु सामाजिक बिखराव भी बढ़ा है।
- शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच बेहतर हुई है।
- सांस्कृतिक संरक्षण हेतु स्थानीय प्रयास आवश्यक हैं।

16.निष्कर्ष

उरांव जनजाति धनबाद जिले में एक संक्रमणकाल से गुजर रही है, जहाँ पारंपरिक विरासत और आधुनिकता के बीच संतुलन की आवश्यकता है। सरकारी योजनाओं के बावजूद ज़मीनी स्तर पर कार्यान्वयन में सुधार की आवश्यकता है। उरांव जनजाति, जो झारखण्ड के आदिवासी समुदायों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है, ने 2000 से 2023 के बीच सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में अनेक बदलावों का अनुभव किया है। यह परिवर्तन एक ओर जहां मुख्यधारा की आधुनिकता, शहरीकरण और तकनीकी प्रगति के प्रभाव स्वरूप उभरकर सामने आया है, वहीं दूसरी ओर यह बदलाव सरकार की योजनाओं, सामाजिक संगठनों के प्रयासों तथा स्वयं समुदाय की जागरूकता और संघर्षशीलता का परिणाम भी है।

सामाजिक स्तर पर, उरांव समुदाय में शिक्षा के प्रति बढ़ती रुचि, महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया में सहभागिता, विवाह एवं पारिवारिक संरचना में परिवर्तन तथा स्वास्थ्य एवं स्वच्छता को लेकर जागरूकता जैसे परिवर्तन स्पष्ट रूप से देखे गए हैं। हालांकि सामाजिक असमानता, जातीय भेदभाव, और पहचान की लड़ाई अब भी अनेक क्षेत्रों में बनी हुई है।

आर्थिक रूप से, धनबाद जैसे औद्योगिक क्षेत्र में रहने के कारण उरांव जनजाति के कई सदस्य कृषि से सेवा क्षेत्र, खनन, निर्माण, और असंगठित मज़दूरी की ओर स्थानांतरित हुए हैं। स्वरोज़गार एवं सरकारी योजनाओं के माध्यम से कुछ परिवारों ने आर्थिक सशक्तिकरण की ओर कदम बढ़ाए हैं, लेकिन अभी भी एक बड़ा वर्ग गरीबी, बेरोज़गारी, भूमि से विस्थापन और अस्थिर आजीविका का शिकार है।

सांस्कृतिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो परंपरागत लोकनृत्य, उत्सव, वेशभूषा, भाषा, रीति-रिवाज आदि के स्वरूप में स्पष्ट बदलाव आए हैं। नई पीढ़ी में सांस्कृतिक विरासत के प्रति आकर्षण अपेक्षाकृत कम हुआ है, और कई पारंपरिक मान्यताएँ धीरे-धीरे विलुप्ति की ओर अग्रसर हैं। इसके बावजूद कुछ क्षेत्रों में सांस्कृतिक पुनरुत्थान (revival) की पहल भी सामने आई है, जहाँ उराँव समाज अपनी जड़ों को पुनः स्थापित करने का प्रयास कर रहा है।

शोध में यह भी स्पष्ट हुआ कि आधुनिकरण और परंपरा के मध्य संघर्ष निरंतर जारी है। जहाँ एक ओर सामाजिक उन्नति और आर्थिक अवसरों की खोज ने उरांव जनजाति को नये अनुभव दिए हैं, वहीं दूसरी ओर यह परिवर्तन उनकी सामुदायिक एकता, सांस्कृतिक विशिष्टता और आत्म-परिभाषा के लिए एक चुनौती बनकर भी उभरा है।

शोध के अंत में यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उरांव जनजाति परिवर्तनशील है, जागरूक है, और चुनौतियों के बावजूद स्वयं को परिवर्तित परिस्थितियों में ढालने में सक्षम है। यद्यपि उन्हें अभी भी सामाजिक न्याय, आर्थिक समावेशन और सांस्कृतिक पुनरुद्धार की दिशा में अनेक प्रयासों की आवश्यकता है।

इस अध्ययन के माध्यम से यह सिद्ध होता है कि यदि नीति-निर्माण, योजनाएं और शिक्षा जनजातीय संदर्भों को ध्यान में रखकर लागू की जाएँ, तो उरांव जैसे समुदायों का सशक्तीकरण न केवल संभव है, बल्कि यह भारत के समावेशी विकास के सपने को भी साकार कर सकता है।

17. सुझाव एवं अनुशंसाएँ

1) सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण हेतु स्थानीय संग्रहालय व अध्ययन केंद्र स्थापित किए जाएँ।
2) शिक्षा व स्वास्थ्य योजनाओं का समुचित क्रियान्वयन हो।
3) आर्थिक आत्मनिर्भरता हेतु स्थानीय हस्तशिल्प, कृषि, और लघु उद्योगों को बढ़ावा दिया जाए।
4) जनजातीय युवाओं में जागरूकता अभियान चलाए जाएँ।
5) ग्राम स्तरीय सांस्कृतिक समितियाँ गठित की जाएँ।

18. भविष्य की दिशा

- विस्तृत तुलना अन्य जनजातियों से की जा सकती है।
- सांख्यिकीय रूप से अधिक व्यापक अध्ययन किया जा सकता है।
- जनजातीय महिला सशक्तिकरण पर केंद्रित अनुसंधान संभावित है।

संदर्भ

डॉ. बी.के. सिंह (2010), *झारखंड की जनजातियाँ*, रांची पब्लिकेशन

Census of India (2001, 2011)

Ministry of Tribal Affairs, Government of India Reports

डॉ. शशि भूषण (2020), *आदिवासी समाज का सामाजिक परिवर्तन*

स्थानीय पंचायत व NGO की रिपोर्ट्स

Sharma, Vimal (2005). *Tribal Culture of India*. New Delhi: National Book Trust.

Sinha, Surajit (2002). *Tribal Society in India*. Kolkata: Indian Anthropological Association.

Government of Jharkhand (Annual Reports 2000–2023)

Roy, S.C. (1915). *The Oraons of Chotanagpur*. Ranchi: Tribal Research Centre

Verma, R.C. (1990). *Indian Tribes Through the Ages.* New Delhi: Publications Division, Ministry of Information and Broadcasting, Govt. of India.

Xaxa, Virginius. (2008). *State, Society and Tribes: Issues in Post-Colonial India.* Pearson Education India.

Ekka, Alexius. (2000). *Socio-Economic Transformation of the Oraons.* New Delhi: Indian Social Institute.

Singh, K.S. (1994). *The Scheduled Tribes.* New Delhi: Oxford University Press.

Ministry of Tribal Affairs, Government of India. (2005–2020). *Annual Reports.*

Census of India (2001, 2011). Registrar General and Census Commissioner, Government of India.

Jharkhand Human Development Report (2004 & 2017). Government of Jharkhand.

Planning Commission Reports (2002, 2007, 2011). Government of India.

Oraon, Sushila. (2016). *Cultural Identity and Globalization: A Study of Oraon Tribe in Jharkhand.* Ranchi University.

Dhanbad District Gazetteer (Latest Edition). Government of Jharkhand.

मिश्रा, बी.एन. (2005). *झारखण्ड की आदिवासी संस्कृति.* रांची: आदिवासी सांस्कृतिक अनुसंधान केंद्र।

मुंडा, रामदयाल (2010). *आदिवासी समाज और संस्कृति.* रांची: झारखंड अध्ययन परिषद।

तिर्की, जे.पी. (2007). *उराँव जनजाति का समाजशास्त्रीय अध्ययन.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

लकड़ा, एलिज़ाबेथ (2012). *आदिवासी महिलाएं और सामाजिक परिवर्तन.* रांची विश्वविद्यालय प्रकाशन।

कुमार, दीपक (2018). *झारखण्ड के आदिवासियों का आर्थिक जीवन.* पटना: लोक भारती प्रकाशन।

उराँव, जोसेफ (2020). *कुड़ुख समाज में सांस्कृतिक संक्रमण.* रांची: जनजातीय शोध संस्थान।

Government of Jharkhand (2000–2023). *Policy Documents and Tribal Welfare Schemes.*

Articles from **Economic and Political Weekly**, **Kurukshetra Journal**, and **Social Action Journal** (संबंधित वर्षों में)।

मीडिया स्रोत: *प्रभात खबर, हिन्दुस्तान, द टेलीग्राफ, The Hindu* – (समयबद्ध रिपोर्टिंग और सामुदायिक समाचारों के लिए)।

UNESCO Reports on Indigenous Peoples and Cultural Preservation (2008–2022)